अुद्योगोंके लिअे भूदान-पद्धति

रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स नं० १५

# हरिजनसेवक

दो आना

( संस्थापक : महात्मा गांधी )

भाग १७ | सम्पादक : मगनभाअी प्रभुदास देसाअी | अंक ३९

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद–९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० २८ नवम्बर, १९५३

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

## शराबबन्दी और सरकार

२

कदम-कदम पर गांधीजी और कांग्रेसकी दुहाअी देनेवाले मंत्री अपने-अपने कामके सम्बन्धमें देश और अपनी हुकूमतवाले विभागोंमें दौरे करते हैं, तब वहां अखबारी प्रतिनिधियोंको बुलाकर या मिलकर अुनके साथ बातचीत करते हैं। अिन सबको कहां तक व्यक्तिगत या सार्वजनिक प्रवृत्तियां कहा जाय, यह अेक सवाल है। अुलटे, यह बात किसीसे छिपी नहीं है कि ये सब मंत्री अिस दृष्टिसे ही आम तौर पर प्रेस-कान्फरेन्स बुलाते हैं या अुसकी व्यवस्था करते हैं कि अुनके कामकाज और प्रवृत्तियां रोज-ब-रोज प्रजा तथा देश और दुनियाके सामने आती रहें और अुनका प्रचार होता रहे। अिसलिअे सौराष्ट्रके दौरे पर जाकर अूटपटांग बोलनेवाले मंत्रीके अिस बचावमें कोअी दम नहीं है कि खानगी बैठकमें अुन्होंने भाषावार प्रान्तोंके सम्बन्धमें जो भावी कल्पना-चित्र प्रस्तुत किया था, अुसका विरोधी पत्र-प्रतिनिधिने अनुचित अुपयोग किया।

फिर, यह भी विचार करने जैसी बात है कि केन्द्रीय सरकारके जिम्मेदार कांग्रेसी मंत्री यदि अिस तरह अंडबंड और मर्यादाको लांघकर बातें बोलते फिरें, तो अुसमें कांग्रेसका या सरकारी तंत्रका अनुशासन भला कहां रह जाता है। अुपर्युक्त मंत्रीने भाषाके आधार पर होनेवाली प्रान्तरचनामें अपने जैसे मंत्रियोंको नये प्रान्तोंको मजबूत बुनियाद पर खड़ा करनेके लिअे जरूरी पैसे पानेके खातिर क्या क्या करना पड़ेगा, अिसका काल्पनिक चित्र पत्र-प्रतिनिधियोंके सामने खींचा था; लेकिन अैसा करके अुन्होंने स्थान, काल और खुद जिस राज्यकी आवभगतका आनन्द ले रहे थे अुसकी विवेकपूर्ण मर्यादाका भी कहां तक पालन किया? और भारत-सरकारकी ओरसे प्रधान-मंत्री और कांग्रेस-अध्यक्षकी यह स्पष्ट घोषणा हो चुकने पर भी कि कांग्रेसी केन्द्रीय सरकार अेक अुच्चाधिकारी कमीशन नियुक्त करके भाषावार प्रान्तरचनाका पूरा सवाल अुसे सौंपे, अुसकी जांच पूरी हो और अुसकी सिफारिशें सरकारके सामने आवें, तब तक आंध्रके बाद अब दूसरे किसी प्रान्तकी रचनाका विचार नहीं हो सकेगा, अगर केन्द्रीय सरकार तथा विभिन्न राज्य-सरकारोंके जिम्मेदार मंत्री, प्रदेश कांग्रेस कमेटियोंके अध्यक्ष और अैसे अन्य नेता बेधड़क वकील बनकर अिसके सम्बन्धमें भाषण, वक्तव्य, प्रचार और संगठन करते रहें, तो अनुशासनकी दृष्टिसे अिसे क्या कहा जायगा?

अिसके अलावा, भाषाके आधार पर नये सिरेसे रचे जानेवाले प्रान्तोंमें बड़े-बड़े नेता मंत्री बनकर क्या करेंगे, अिसका स्पष्ट दर्शन अुपर्युक्त मंत्रीने सौराष्ट्रमें अपना दिल खोलकर जिस तरह कराया अुससे तो प्रजाकी आंख खुल जानी चाहिये। लाखोंकी तादादमें गांवोंमें बसनेवाली श्रमजीवी प्रजाकी घर-गृहस्थी और सुख-शांतिका नाश करके अपने नये प्रान्तके लिअे पैसा पानेकी अिच्छा रखनेवाले अिन नेताओंको अपनी प्रजाके आम लोगोंके हितका कितना खयाल है, अिसकी अेक झांकी आम जनताको अैसे अुद्गारोंमें मिल जाती है।

शराबकी आमदनी खोना हमें महंगा पड़ेगा, अैसा प्रचार करनेवाले ये नेता, शहरके शराबी लोग या स्थापित हितोंवाले वर्ग अपने प्रचारमें अेक बात बड़ी चालाकीसे छिपा जाते हैं। वह यह कि शराबसे होनेवाली आयका बहुत बड़ा भाग शहरके क्लबों और होटलोंमें विलायती शराब पीनेवाले फैशनेबल लोगोंकी जेबसे नहीं, बल्कि प्रान्त प्रान्तके हजारों-लाखों गांवोंमें चलनेवाली देशी शराबकी दुकानों या ताड़ीके मंडपोंमें जाकर अपनी रोजकी मजदूरीकी मामूली आयको शराब और ताड़ीके पीछे बरबाद करनेवाले और फिर घर जाकर अपने बाल-बच्चों और घर-गृहस्थीका रोज-रोज सत्यानाश करनेवाले गांवोंके श्रमजीवियोंकी जेबसे आता है।

शराबबन्दीवाले प्रान्तों या भागोंमें शराबका छिपा व्यापार करनेवाली कुछ गुनहगार टोलियों और अुनके समर्थकों तथा ग्राहकोंको छोड़ दें, तो हरअेक शहरकी मजदूर-बस्तियों और शराबकी दुकानोंवाले असंख्य गांवोंका नसीब अिन चार-पांच बरसोंमें ही कितना पलट गया है, हजारों-लाखों गन्दी अंधेरी चालों और झोंपड़ोंमें किस तरह सुख-चैन और आनंद-मंगलका राज फैला हुआ है, कितने श्रमजीवी परिवारोंमें नग्न दरिद्रता, गुदड़े-चिथड़ों, रोने-कलपने, झगड़े-टंटों, मार-पीट और खाली पड़े हुअे टीन और मिट्टीके टूटे-फूटे बरतनोंकी जगह आज तांबे-पीतलके चमकते बरतनों, साज-सामान, नये साफ-सुथरे कपड़ों, हंसते-खेलते बालकों और छुट्टी या फुरसतके समय पत्नी और बच्चोंके साथ बाग-बगीचोंकी सैर या वनभोजनके लिअे निकलनेकी अिच्छा रखनेवाले सुखी व सन्तुष्ट माता-पिताओंने ले ली है तथा हजारों-लाखों चेहरे कैसे अुत्साह और अुमंगसे चमकने लग गये हैं, अिस तरफ शराबबन्दीके खिलाफ शोरगुल मचानेवालों और अुसे सुननेवालोंने कभी कसम खानेको भी आंख अुठाकर देखा है?

शराबकी अपवित्र आयको ठुकराने और अुसके लिअे अपना आग्रह जारी रखनेके लिअे बम्बअी और मद्रास जैसे अेक-दो राज्योंकी हमेशा निन्दा और टीका की जाती है। आश्चर्य तो यही है कि किफायतशारीके नाम पर या राष्ट्रके रचनात्मक कामोंको आगे बढ़ानेके लिअे पैसेकी जरूरतके नाम पर गांव-गांवमें बन्द पड़ी हुअी शराब-ताड़ीकी दुकानोंको फिरसे खोलकर देशकी हजारों-लाखों बहनें-बेटियोंकी घर-गृहस्थीको फिरसे धूलमें मिलानेकी खुली हिमायत करनेवाले अिन मंत्रियों और नेताओंको जनता अितनी नरमीसे बरदाश्त कैसे कर लेती है। बम्बअी जैसे शहरोंमें होटलों और सार्वजनिक खान-पानके स्थानोंको आधी रातमें अेक

www.vinoba.in

घंटे जल्दी बन्द करनेके बम्बअी सरकारके प्रस्ताव पर अैसा ही शोरगुल मचाया गया था, जिसमें बम्बअी प्रदेश कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष महोदयने भी अपना सुर अच्छी तरह मिलाया था। अिन लोगोंने कभी यह भी विचार किया है कि आधी रात बीत जाने तक घरसे बाहर होटलोंमें खाने-पीने या नाच-रंगमें मस्त रहनेका रिवाज हमारे यहां पश्चिमके देशोंसे आया है, जिसे हमने अंग्रेजी हुकूमतके जमानेमें अपने गुलाम मानसके कारण अपने जीवनमें अुतार लिया है। अिसके सिवा, पश्चिमके देशोंमें स्त्री-पुरुष दोनों बड़ी हद तक निशाचरोंका जीवन बिताते हैं, जबकि हमारे हजारों-लाखों परिवारोंकी मां-बेटियां घरके बाहर निकलने-वाली न होनेके कारण पुरुषोंकी आधी रात तक घरसे बाहर समय बितानेकी आदतका हमारे राष्ट्रीय जीवनसे कोअी मेल नहीं बैठता। लेकिन आजकल तो अैसी छूटोंके लिअे भी बात बातमें आजादीकी दुहाअी दी जाती है और शानसे कहा जाता है कि यह डेमॉक्रेसी — लोकशाही — का जमाना है।

बहुत रात तक खाने-पीने और आधी रात बीत जाने तक जागकर सुबह नौ बजे अुठनेका रिवाज पश्चिमके ठंडे देशोंका है, जहां आदमीको सुन्दर प्रभात, अरुणोदय और रंगबिरंगी कुदरतकी शोभा मुश्किलसे देखनेको मिलती है। हमारे जैसे गरम देशके साथ अिस रहन-सहनका बिलकुल मेल नहीं बैठता। हमारे लाखों गांवोंमें फैले हुअे लोग जल्दी सोकर बड़े संवेरे अुठनेवाले और खुले आकाशके नीचे काम करनेवाले हैं। शहरोंमें रहनेवाला आदमी बनावटी और आलसी जीवन जीता है। अुसके अिस आलसी जीवनमें वृद्धि करनी है या कमी, यह सोचना समाजके नेताओंका काम है। डेमॉक्रेसी और व्यक्ति-स्वातंत्र्यके नाम पर स्वच्छन्द जीवन-पद्धतिका पोषण करना अुनका काम नहीं।

शराब पीनेकी स्वतंत्रतावाले देशोंमें प्रजाका समझदार वर्ग शराबकी बुराअियों पर हमेशा जोर देता आया है। यह अेक निर्विवाद सत्य है कि शराब पीनेसे लोगोंकी कार्यशक्ति और अुत्पादन-शक्ति नष्ट होती है, और अिस बुरे व्यसनसे छूटनेवाले लोगोंकी ये दोनों शक्तियां बढ़ती हैं। ब्रिटेनके अेक लाख शराबी और चार लाख अति व्यसनी लोग पहले दर्जेके राष्ट्रके नाते ब्रिटेनकी दुनियामें टिके रहनेकी कार्यशक्तिका बुरी तरह नाश कर रहे हैं, अिन शब्दोंमें अिंग्लैंडके 'फैमिली डॉक्टर' नामक अेक लोकप्रिय डॉक्टरी मासिकके अक्तूबर १९५३ के अंकमें अेक डॉक्टरने अपना दुःख प्रकट किया है। लेकिन हमारे नेता अेक तरफ तो रात-दिन राष्ट्रीय अुत्पादन और जनताकी अुत्पादन-शक्ति बढ़ानेकी बात करते हैं, और दूसरी तरफ शराब पीनेकी स्वतंत्रता देनेकी बात करते हैं। अिन दोनोंके बीच अुन्हें कोअी विरोध ही नहीं दीखता! लेकिन शराबबन्दीवाले प्रान्तों और शहरोंमें मजदूरों और श्रमजीवियोंके निस्तेज और दुःखी जीवन, जैसा कि अूपर कहा गया है, आज अुत्साही, आनन्दपूर्ण और कार्यक्षम बन गये हैं, यह हर कोअी देख सकता है।

जनताके लाखों परिवारोंके घरबार मिट्टीमें मिलाकर अुनकी बरबादीसे अपवित्र आय कमानेका अिन्कार करनेवाली राज्य-सरकारोंने बड़ी आयके दरवाजे बन्द करके जनताके अभ्युदयकी अनेक योजनायें रोक दी हैं — अैसा शोरगुल मचानेवाले लोगोंको आज केन्द्रीय और राज्य-सरकारें दूसरी अनेक दिशाओंमें राष्ट्रीय धनका जो विगाड़ कर रही हैं अुसके खिलाफ आवाज अुठाने और प्रचार करनेकी बात क्यों नहीं सूझती? विशेष प्रकारकी बड़ी विदेशी मशीनोंका आयात करना आज हमारे देशके लिअे शायद अनिवार्य हो, तो भी लाखों-करोड़ों रुपये खर्च करके मंगाअी जाने-वाली बादशाही शान-शौकतवाली मोटरें, रेलवे पैसेंजर गाड़ियां, करोड़ोंकी विदेशी सिगरेटें और मौज-शौककी दूसरी अनेक चीजें, दुनियाके विभिन्न देशोंमें बादशाही ठाटबाटमें चलाये जानेवाले राजदूतावास, विदेशी कहे जानेवाले निष्णातों और विदेशी व्यापारी कंपनियोंको दी जानेवाली आश्चर्यजनक छूटछाट और अिजारे — अिन सबके पीछे राष्ट्रीय धनकी जो बरबादी होती है, अुसे रोकने और अुसमें किफायतशारी करनेका आन्दोलन अुठानेकी बात शराबके हिमायतियों और प्रचारकोंको क्यों नहीं सूझती? अभी हालमें ही बम्बअी सरकारने कुओंके ठेकेमें जो धोखा खाया, अुसकी धारासभामें गरमागरम चर्चा हुअी थी और कुछ ही समय पहले हमारे कुछ राजदूतावासोंके बीसों मोटरों, बादशाही ढंगके फर्नीचर या अैसी ही दूसरी तड़क-भड़कके पीछे अनुचित ढंगसे जो लाखों रुपये फूंक दिये थे, अुसके खिलाफ भारत-सरकारके आडिटरों द्वारा आपत्ति अुठानेकी बात प्रकाशमें आअी थी। अिस अनुचित खर्चमें कमी करने और अुसकी सीमा बांधनेकी बात कहनेके बदले देशके लाखों परिवारोंकी घर-गृहस्थीको सुखी और भरी-पूरी बनानेके लिअे शराबकी अपवित्र आयको छोड़नेका आग्रह रखनेवाली अेक-दो कांग्रेसी राज्य-सरकारोंकी ही टीका और निन्दा क्यों की जाती है?

लेकिन, जैसा कि पहले कहा गया है, जहां केन्द्रीय सरकार और देशके बड़े नेता ही शराबकी बुराअीको सख्तीसे दबा देनेके विषयमें अक्षम्य शिथिलता या परोक्ष नाराजी दिखाते हों, वहां बम्बअी-मद्रास जैसे अेक-दो राज्योंका आग्रह और अुत्साह कब तक टिका रहेगा यह अेक बड़ा सवाल है।

महाबलेश्वर, २७-१०-'५३ **स्वामी आनन्द**

(गुजरातीसे)

## सख्य-भक्तिका जमाना

[मुंगेर जिलेके कियाजोरी पड़ाव पर दिये हुअे प्रवचनसे।]

### जमानेकी भूख

आपको मालूम है कि राजाओंके दिन अब चले गये। बड़े जमींदारोंके दिन भी अब नहीं रहे। आगेकी दुनिया जनताकी दुनिया होगी। अुसमें आम जनताकी आवाज प्रमाण मानी जायगी। आज सारी दुनियामें प्रेमकी भूख जगी है। आजका जमाना बराबरीका नाता चाहता है। यह सख्य-भक्तिका जमाना है।

अर्जुन और भगवान्‌के बीच सख्य-भक्तिका नाता था। दोनों बराबरीसे काम करते थे। भगवान्‌के पास ज्ञानका भंडार था। अर्जुनका ज्ञान सीमित था। वह पराक्रमी था, लेकिन अुसकी शक्ति भी सीमित थी। भगवान्‌की शक्ति निःसीम थी। लेकिन तो भी अुन दोनोंके बीच मित्रताका, बराबरीका सम्बन्ध था। भगवान्‌के लिअे अर्जुनके मनमें आदर था, लेकिन अुनका नाता बराबरीका ही था।

### अतीतकी दास्य-भक्ति

अुससे पहले अेक जमाना था, और वह भी बड़ा अच्छा जमाना था, दास्य-भक्तिका। अुस जमानेमें स्वामी-सेवकका भाव था। स्वामी और सेवकमें परस्पर प्रेम था। लेकिन स्वामी सेवकका पालन-पोषण करता था और सेवक स्वामीकी भक्ति करता था। वह हनुमानका जमाना था। अुसने जो रामकी भक्ति की वह दास्य-भक्ति थी।

### सख्य-भक्तिका युग

आज सख्य-भक्तिकी भूख दुनियामें बहुत है। अिसके मानी यह नहीं कि जो पूज्य पुरुष हैं अुनके लिअे आदर नहीं होगा। लेकिन आदरके साथ-साथ अब बराबरीका नाता भी रहेगा।

हनुमानके जमानेमें समाज-रचना अैसी थी कि कुछ शक्ति-शाली पुरुष स्वामी थे, और कुछ सेवापरायण लोग सेवक थे।

www.vinoba.in

सेवक और स्वामीमें प्यार था, झगड़ा नहीं था। लेकिन अुस जमानेमें विकासकी अेक मर्यादा थी।

आजके जमानेमें स्वामी सेवकका नाता, फिर चाहे वह प्रेमका ही क्यों न हो, काफी नहीं माना जाता। बीचमें अैसा जमाना भी आया जब कि स्वामी जुल्मी निकले, और सेवकोंके मनमें स्वामीके लिअे आदर नहीं रहा। आज भी स्वामी-सेवकके सम्बन्ध अच्छे हो सकते हैं, लेकिन आजके जमानेकी मांग सख्य-भक्तिकी है। स्वामी-सेवकका नाता अिस जमानेके लिअे काफी नहीं है।

अिसी वास्ते हम जब दान मांगते हैं, तब यह नहीं कहते कि "आप बड़े हैं, स्वामी हैं, मालिक हैं, हमें दान दीजिये, हम आपकी सेवा करेंगे। हम पर आपका बड़ा अुपकार होगा।" हम तो यह कहते हैं कि सब भाअी-भाअी हैं। अपनी बराबरीका हिस्सा दीजिये। दानका अर्थ ही समान विभाजन होता है, बराबर बंटवारा होता है। अिसलिअे जब हमें कोअी सौ अेकड़में से दो अेकड़ देता है, तो हम लेते नहीं हैं। अगर हम सेवक भावसे मांगते तो दो अेकड़ भी ले लेते, और अुनको प्रणाम करते और अुनका अुपकार मानते। लेकिन आज हम सखाके नाते मांग रहे हैं।

### आज सब बराबर होंगे

आजकी समाज-रचना अब सख्य-भावको ही स्वीकार करेगी। गुरु-शिष्य भी आज अेक-दूसरेके मित्र बनेंगे। दोनों अेक दूसरे पर प्यार करेंगे। गुरु शिष्यको सिखायेगा, और शिष्य भी गुरुको सिखायेगा। जिसके पास जो होगा वह दूसरेको देगा, और दोनों अेक-दूसरेका अुपकार मानेंगे। अिस तरह बराबरीका नाता मानते हुअे गुरु-शिष्य रहेंगे, मालिक-मजदूर रहेंगे, स्वामी-सेवक रहेंगे।

अेक जमाना था जब पत्नी पतिको पतिदेव समझती थी और अपनेको दासी कहती थी। वह जमाना भी खराब नहीं था। लेकिन आज हम अेक कदम आगे बढ़ गये हैं। आजकी पत्नी पतिव्रता होगी, और पति पत्नीव्रती होगा। दोनों अेक-दूसरेको देवता समझेंगे। जिसकी योग्यता ज्यादा होगी अुसका आदर होगा। अगर पतिकी योग्यता अधिक होगी, तो पत्नी अुसका आदर करेगी, और पत्नीकी योग्यता अधिक होगी, तो पति अुसका आदर करेगा। लेकिन अुन दोनोंका नाता बराबरीका रहेगा।

### समाज-रचनाका नया आधार

हमें जमानेकी मांगके अनुसार समाजको बनाना होगा। हमें यह समझ लेना चाहिये कि पुराने जमानेके मूल्य वैसेके वैसे आज नहीं टिकेंगे। तुलसी रामायणके जमानेमें जो मूल्य थे वे आजके ज़मानेके मूल्य नहीं रहे। अुस जमानेमें ब्राह्मण श्रेष्ठ था, लेकिन आजके जमानेकी रामायणमें केवल ब्राह्मण ही श्रेष्ठ नहीं समझा जायगा। जहां अच्छाअी होगी वहां अुसका आदर होगा। लेकिन नाता बराबरीका होगा।

अिस जमानेमें कारखानेदार और मजदूर रहेंगे। अेकमें अकल ज्यादा रहेगी, दूसरेमें ताकत ज्यादा रहेगी। तो मज़दूर यह नहीं कहेगा कि आप मालिक हैं और हम आपके नौकर हैं। यह नाता अब चलेगा नहीं। अब तो दोनों साझेदार बनेंगे। कारखानेदारको अपनी अक्लका मेहनताना मिलेगा, और मजदूरको भी अपनी ताकतका अुतना ही मेहनताना मिलेगा। मेहनताना सबका समान होगा। जहां योग्यता अधिक होगी, वहां आदर किया जायगा, लेकिन सब अेक-दूसरेके मित्र रहेंगे, साथी रहेंगे।

जो लोग बदले हुअे जमानेके अनुसार बर्ताव करना नहीं जानते, वे हार भी खाते हैं और मार भी खाते हैं। आदमी कितना ही बड़ा क्यों न हो, अुसकी पुरानी शान, ठाट, रोब अब नहीं चलेगा।

### सबका समान अधिकार

आज कार्यकर्ताओंसे जब बात हुअी, तब हमने कहा कि छठा हिस्सा हमें चाहिये, मानो कोअी टैक्स वसूल कर रहा हो। लेकिन मैं तो यह विचार समझ रहा हूं कि जमीन, सम्पत्ति और अुत्पादनके साधन पर अब सबका समान हक है। जमानेकी मांगको जो कहता है अुसे लोग अुद्धत कहते हैं। यदि अुसे अुद्धत समझोगे, तो वह अुद्धत बनेगा। लेकिन यदि जमानेकी भूखको पहचानोगे, तो मांगनेवाले सारे नम्र रहेंगे, छोटे बड़ोंका आदर करेंगे।

लोग कहते हैं कि आजकल बच्चे माता-पिताका आदर नहीं करते। बच्चा तो बचपनसे ही मां पर पूर्ण श्रद्धा रखकर काम करता है। मां यदि कहती है कि वह चांद है, तो बच्चा अुसे मान लेता है। वह यह नहीं कहता कि ठहरो, हमें तहकीकात करने दो कि यह सचमुच चांद है या नहीं। अितनी श्रद्धा होते हुअे भी लोग कहते हैं, बच्चे मां-बापका मानते नहीं। मैं तो यही कहूंगा कि माता-पिता जमानेको समझते नहीं। माता-पिता बच्चोंके साथ बराबरीके नातेसे रहें और बराबरीके नातेसे अुन्हें प्यार करें। अुन्हें हुक्म न दें, सलाह दें। आज्ञा नहीं दें, पीटें नहीं। पहले माता-पिता पीटते थे, लेकिन प्रेमसे पीटते थे। अिस जमानेमें वह बात नहीं चलेगी। अिस जमानेमें माता कहेगी कि मैं तुम्हें सजा नहीं करूंगी, अपने आपको दंड दूंगी, भूखी रहूंगी।

### भूदानका नवविचार

सबकी अपनी-अपनी विशेषता होती है। मजदूरमें यदि बुद्धि कम है तो हृदय ज्यादा बड़ा हो सकता है। किसीके लिअे वह मर मिटनेको तैयार हो सकता है। हमारी बुद्धि ज्यादा हो लेकिन कुछ कमजोरी भी हो सकती है। सबमें कुछ कमजोरी, कुछ विशेषता होती है। अिसलिअे बराबरीका प्रेम होना चाहिये। कोरा प्रेम नाकाफी है। अिस दृष्टिसे यदि आप भूदान-यज्ञको देखेंगे, तो आपको पता चलेगा कि यह आजके जमानेकी मांग है। अगर भूदान-यज्ञ जमानेकी मांगके अनुकूल नहीं होता, तो छोटे लोग हमें जमीन देते नहीं, और बड़ोंमें से भी कुछ लोग हमें धक्का मारते। और जो लोग देते अुनका हमें अुपकार मानना पड़ता। आज तो हम हरअेकसे जमीन मांगते हैं, क्योंकि हम सबको कहना चाहते हैं कि तुम जमीनके मालिक नहीं हो। हम तो अब कहते हैं कि जितने काश्तकार हों अुतने दान-पत्र मिलने चाहियें। जब कोअी आदमी जमानेकी मांगको पहचानता है, धर्मभावना जाग्रत करता है, तब हरअेकके लिअे वह बात मानना लाजमी हो जाता है। यह अेक नवविचार है, जो मैंने अपनी थैलीमें से नहीं निकाला है। जमानेसे ही वह लिया है। अिस विचारको फैलानेकी दृष्टिसे काम कीजिये, सिर्फ भूमि प्राप्त करनेकी दृष्टिसे नहीं। जब आप लोगोंको समझायेंगे कि सख्य-भक्तिका जमाना आ गया है, तब आपको काममें सफलता मिलेगी।

**विनोबा**

---


**भूदान-यज्ञ**

**विनोबा भावे**

कीमत १–४–० डाकखर्च ०–६–०

**भावी भारतकी अेक तसवीर**

[दूसरी आवृत्ति]

**किशोरलाल मशरूवाला**

कीमत १–०–० डाकखर्च ०–४–०

**नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद–९**


www.vinoba.in

# हरिजनसेवक

२८ नवम्बर १९५३


## अुद्योगोंके लिअे भूदान-पद्धति

बम्बअी विश्वविद्यालयके स्कूल ऑफ अिकॉनामिक्सके प्रो० दांतवालाने मेरा ध्यान श्री अेम० आर० मसानीके लेख (जनता, ३०-८-'५३) और अुसके जवाबमें लिखे अपने लेखकी तरफ खींचा है। श्री मसानीने अपने लेखमें यह प्रश्न अुठाया है: "क्या भूदानकी पद्धतिका, जिसने दो सालसे कुछ ही ज्यादा समयमें लगभग १९ लाख अेकड़ भूमि बेजमीनोंमें बांटनेके लिअे प्राप्त कर ली है और जो १९५७ तक ५ करोड़ अेकड़ प्राप्त करनेका लक्ष्य अपने सामने रखती है, औद्योगिक क्षेत्रमें भी कोअी अुपयोग हो सकता है?"

और वे पूछते हैं: "क्या आजके अुद्योगपति, मजदूरों और राज्यके बीच फैले हुअे परस्पर अविश्वासकी जगह विश्वास और सहयोगका अैसा ही वातावरण पैदा किया जा सकता है?"

हमारे देशके लोगोंमें भूदानके विचारको जो अनोखी सफलता मिली है, अुसे देखते हुअे यह प्रश्न बिलकुल स्वाभाविक है। अिसलिअे हमें अिस पर जरूर विचार करना चाहिये।

सबसे पहले हमें श्री विनोबाके भूदान-आन्दोलनको अच्छी तरह समझ लेना चाहिये। यह केवल जमींदार और काश्तकारों या बेजमीन मजदूरोंके बीच 'विश्वास और परस्पर सहयोगका वातावरण' पैदा करनेका ही सवाल नहीं है, बल्कि बेजमीनको जमीन देने, अुसे अपने ही गांवमें फिरसे बसाने और जमीनका स्वतंत्र और स्वावलम्बी काश्तकार बनानेका सवाल है। यह देशके अेक करोड़ बेजमीन परिवारोंको अुनके अपने ही गांवोंमें फिरसे बसाकर खेती और अुद्योगोंकी ग्रामीण अर्थ-रचनाका देशव्यापी प्रयोग और सुव्यवस्थित योजना शुरू करनेका आन्दोलन है।

अिसलिअे अिस सम्बन्धमें पहला काम यह करना होगा कि हम जमींदार वर्गसे बेजमीनोंके लिअे अपनी जमीनें देने या छोड़नेका अनुरोध करें। भूदान-आन्दोलनमें केवल जमीन देने और लेनेके सम्बन्धकी ही कल्पना नहीं रही है; यह सामाजिक न्याय और समानताकी भावनाको जाग्रत करने और सब लोगोंमें अुत्पादनके साधनोंका अुचित बंटवारा करनेका, खासकर अुन लोगोंमें जो अुनके जरिये जीते और मेहनत करते हैं, आन्दोलन है।

अिसलिअे अगर हम अुद्योगपतियों और पूंजीपतियों द्वारा स्वेच्छासे पूंजी छोड़ने या देनेकी अैसी ही पद्धतिका विकास और प्रयोग करना चाहते हैं, तो यह केवल अुद्योगपतियों, मजदूरों और राज्यके बीच फैले हुअे अविश्वासकी जगह विश्वास और सहयोग पैदा करनेका सवाल नहीं है; बल्कि अैसे रास्ते और साधन खोजनेका सवाल है, जिनसे पूंजीका अुसके जरिये परिश्रम करनेवालों और सामाजिक सम्पत्ति अुत्पन्न करनेवालोंके हितमें समाजीकरण हो जाय। यह पूंजीके स्वामित्वमें परिवर्तन करनेकी बात है — वह पूंजी जो असलमें समाजकी है, लेकिन हमारे आजके कानूनों और जायदादके विचारोंके अनुसार जिस पर व्यक्तियों और लिमिटेड मंडलोंका अधिकार है और अिसलिअे जो अपने स्वार्थ और संकुचित हितों या लाभके लिअे अुसका दुरुपयोग कर सकते हैं। अिसलिअे, जैसा कि मैंने पहले अिन कालमोंमें कहा था, सवाल यह है कि पूंजीमें सामाजिक ट्रस्टके नाते काम करनेका गुण कैसे पैदा किया जा सकता है। भूमिदान सुझाता है कि अिसके लिअे पूंजीदान होना चाहिये। तब असल सवाल हमारे सामने यह खड़ा होता है कि सबके हितमें हम यह कैसे कर सकते हैं।

अैसे परिवर्तनका आधार हमें गांधीजीके ट्रस्टीशिपके सिद्धान्तमें मिलता है। श्री मसानी केवल मालिक-मजदूरोंके झगड़े कम करने, अुद्योगोंमें पूंजी लगानेवालों और अुसके स्वामियोंमें फिरसे विश्वास पैदा करने तथा अुद्योगोंके व्यवस्थापकोंमें खानगी साहसकी भावना फिरसे जाग्रत करनेकी दृष्टिसे ही अपनी चर्चामें अिस विचारको स्थान देते हैं। दरअसल ट्रस्टीशिपके विचारका अुद्देश्य कुछ और ही और अिससे ज्यादा करनेका है। प्रधानतः यह अुद्योगमें पूंजीका अधिकार अुन पूंजीहीन मजदूरोंके पक्षमें छोड़ देनेका अनुरोध करता है, जिन्हें सचमुच पूंजीकी जरूरत है और जो शोषण करनेवाले पूंजीपतिसे स्वतंत्र और मुक्त होने चाहिये। परोक्ष जमींदारीकी तरह पूंजीकी परोक्ष मालिकीका भी, जिसे आजके औद्योगिक संगठन, बैंकके कारोबार और अर्थनीतिने संभव बनाया है, निश्चित रूपसे अन्त होना चाहिये। अिसके लिअे अुपयोगमें लाअी जानेवाली भूदानकी पद्धति हमसे चाहेगी कि यह काम पूंजीपतिकी स्वीकृति और अैच्छिक सहयोगसे हो। पहला भूदान देनेवाले श्री रेड्डीकी तरह यह नया आन्दोलन शुरू करनेके लिअे पहला पूंजीदान करनेवाला कोअी होना चाहिये। श्री विनोबाका सम्पत्ति-दानका विचार अिस सम्बन्धमें आम तौर पर हमारी सहायता करेगा। अिसके लिअे नीचे कुछ सुझाव दिये जाते हैं:

शेयरोंकी सारी पूंजी मजदूरोंको सौंप दी जानी चाहिये, जिसका वे सहकारी पद्धतिसे 'न नफा न टोटा' के आधार पर चलाये जानेवाले अुद्योगमें अुपयोग करें।

अुद्योगका प्रबन्ध करनेवाले लोग अपने मेहनतानेकी सीमा निर्धारित करें, जिसका मजदूरोंके वेतनसे अुचित अनुपात हो।

मैनेजिंग अेजेन्सीकी घातक पद्धतिका अन्त हो जाना चाहिये; अुद्योगोंके संचालक — अेजेन्ट — औद्योगिक सहकारी मंडलोंके पक्षमें अपने अधिकार छोड़ दें।

शुरूमें राज्यको औद्योगिक मुनाफे और अेजेन्सीके कमीशनकी अुच्चतम मर्यादा बांध देनी चाहिये; और जो लोग कुशल या अकुशल मजदूरों, निष्णात शिल्पियों या व्यवस्था-विभागके कर्मचारियोंके रूपमें अुद्योग चलाते हैं, अुन सबका अुचित माहवारी वेतन बांध दिया जाना चाहिये।

आजकी दुःखद स्थिति यह है कि व्यापार, व्यवसाय और अुद्योगों तथा सराफी (बैंकिंग) और योजना सम्बन्धी हमारे विचार अिससे सर्वथा भिन्न दिशामें दौड़ रहे हैं, जो अनिवार्य रूपमें हमें संघर्षों, तंगदिली और झगड़ोंकी तरफ ले जाती है। जब तक हम अपने अिन विचारोंमें जड़मूलसे क्रांति नहीं करते, तब तक मौजूदा पूंजीवादी व्यवस्थासे बाहर निकलनेका कोअी रास्ता नहीं मिल सकता।

१८-११-'५३
(अंग्रेजीसे)

मगनभाअी देसाअी


**रचनात्मक कार्यक्रम**

[दूसरा संस्करण]

लेखक: गांधीजी

अनु० काशिनाथ त्रिवेदी

कीमत ०-६-० डाकखर्च ०-२-०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद-९


www.vinoba.in

## कुछ शंकायें

अेक मित्रने, जो सन् '२० से ही चरखा चलाते आये हैं, खादी पहनते हैं और बापूजीकी प्रेरणाके अनुसार ग्राम-सेवा भी करते हैं, अेक पत्र द्वारा बहुतसी शंकायें जाहिर की हैं। अुनकी शंकायें ये हैं :

१. अिस पुराने नारेकी आज कोअी कीमत नहीं रही कि मिलें हमारी कपड़ेकी जरूरत पूरी नहीं कर सकतीं। आज अुनके पास देशकी जरूरतें पूरी करनेके बाद माल बचता है और वे अपने अुत्पादनका काफी हिस्सा भारतसे बाहर भी भेजती हैं।

२. अ० भा० चरखा-संघ अपनी जिम्मेदारी पूरी नहीं कर सका है। अेक आदर्श चरखेका नमूना आज भी तैयार नहीं हो सका है; तकली (सवा लाखका चरखा) का भाव आज कोअी नहीं पूछता — कोअी तकली नहीं चलाता; और पेटी चरखा बहुत महंगा पड़ता है, अुसे गांवोंमें हर जगह नहीं फैलाया जा सकता।

३. अ० भा० चरखा-संघ समय-समय पर अपनी नीति बदलता रहा है; वह खादी-अुत्पादनसे वस्त्र-स्वावलम्बन और वस्त्र-स्वावलम्बनसे खादी-अुत्पादनकी दिशामें मुड़ता रहा है। अुसकी दृष्टि हमेशा नफे और नुकसानकी तरफ ही रहती है।

४. वस्त्र-स्वावलम्बनकी नीतिके बावजूद खादी-भंडार खादी और पूनियां दोनों बेचते हैं। पूनियां खराब किस्मकी होती हैं। अुनसे आखिर खराब किस्मकी खादी बनती है, बुनकर सूत नहीं बुनते और खादी अपनी प्रतिष्ठा खो देती है।

५. पच्चीस बरसके अभ्यासके बाद कुछ समय पहले हमसे सूतको दुबटा करनेको कहा गया। हर कोअी दुबटाकी ही बात करता था। और आज अुस बातको बिलकुल भुला दिया गया है।

६. केवल सूत कात लेना काफी नहीं था; हम सबसे बुनकर बननेको कहा गया। लेकिन किसीने अिस पर दिलसे अमल नहीं किया। क्या अैसा करना संभव था?

७. अेक समयका फलने-फूलनेवाला बम्बअीका खादी-भंडार बन्द कर दिया गया है। अब अुसका प्रतिरूप भारतकी राजधानीमें खुलने जा रहा है।

८. खादी-कार्यकर्ता गांवोंमें जानेकी वृत्ति नहीं रखते। अुलटे, कुछ ग्रामीण क्षेत्रोंके कार्यकर्ता भी बड़े शहरोंमें चले गये हैं।

९. आज ३० सालके बाद भी हम अैसा कोअी गांधी-ग्राम देशमें नहीं बता सकते, जिसकी रचना गांधीजीके आदर्शोंके अनुसार हुअी हो।

अिन शंकाओंको देखते हुअे मुझको लगता है कि ये मित्र चरखेके मूलतत्त्वको भलीभांति समझे नहीं हैं। अैसे बहुतसे मित्र हैं, जिनको अिस प्रकारकी शंकायें होती रहती हैं। मैं यहां अुन मित्रोंको अुत्तर देनेकी कोशिश कर रहा हूं।

१. हमारे सामने कभी भी अैसी बात नहीं रही है कि मिलों द्वारा काफी कपड़ा पैदा नहीं हो सकता है। यह सही है कि विनोबाजीने मिलोंके बारेमें यह कहा था कि पहलेसे मिलोंमें कपड़ेका अुत्पादन घट गया है, लेकिन यह बात भारतीय पूंजीकी परिस्थितिके कारण है। आज वह परिस्थिति बदली नहीं है। अिसलिअे मिलें प्रचुर मात्रामें कपड़ा नहीं पैदा कर सकतीं, यह वस्तुस्थिति अभी भी कायम है। वस्तुतः यह मिलोंकी अक्षमताके कारण नहीं, बल्कि भारतीय परिस्थितिके कारण है।

शहरके मित्रोंको आज जो प्रचुरता दिखाअी देती है, वह वास्तविक प्रचुरता नहीं है। अगर गहराअीसे अिसकी जांच की जाय, तो मालूम होगा कि कपड़ेकी मिलोंमें अुत्पत्ति बढ़ी नहीं है। बेकारी बढ़नेके कारण जनताकी क्रयशक्ति कम होनेसे मिलोंमें अुत्पादित वस्त्रोंका स्टाक बढ़ रहा है और अुसे बाहर भेजनेकी आवश्यकता पड़ गअी है।

२, ५. चरखा-संघ निरंतर प्रयोग करता है। किसी भी प्रगतिशील प्रवृत्तिमें यह स्वाभाविक है कि कुछ आविष्कार हो और अनुभवसे अुसे रद्द करना पड़े। लेकिन अिस कारण चरखेकी प्रगतिमें रुकावट नहीं आती, क्योंकि प्रयोग-दशामें कुछ प्रयोगकी वृत्तिवाले लोग ही नये आविष्कारको अपनाते हैं और जब वह सिद्ध हो जाता है, तभी जनता तक पहुंचता है।

यरवदा-चक्र अगर कीमती है तो अुतनी ही क्षमता रखनेवाला बांस-चरखा देहातोंमें काफी सस्तेमें बनता है। गरीब जनता काफी तादादमें अुसे चला सकती है और चलाती भी है। फिर भी चरखा-संघ, जो आज सर्व-सेवा-संघमें विलीन हो गया है, नये आविष्कारकी खोजमें लगा हुआ है और लगा रहेगा। और हो सकता है कि भविष्यमें भी कुछ यंत्र-आविष्कारके बाद अुसे रद्द करना पड़े। किसी भी अेक मॉडेल (model) को आखिरी बताकर चुप बैठनेसे प्रगति नहीं हो सकती। अिस प्रयोग वृत्तिसे ही दुबटा आदिका प्रयोग किया जाता है। मैं समझता हूं कि गांधीजी पर श्रद्धा रखकर काम करनेवाले व्यक्ति हमेशा प्रयोग और प्रगतिके कायल होंगे।

३. यह सही है कि चरखा-संघ समय समय पर अपना कार्यक्रम बदलता रहता है। लेकिन वे सारे फेरबदल चरखेके मूल तत्त्वकी ओर प्रगतिकी दिशामें रहते हैं। आखिर गांधीजीने चरखेकी बात अिसलिअे नहीं की थी कि अुसके जरिये कुछ गरीबोंको कुछ दयालु व्यक्तियों द्वारा राहत पहुंचायी जाय। बल्कि चरखेके जरिये अेक महान आर्थिक क्रांति करके शोषण-हीन समाज स्थापित करनेके लिअे ही अुन्होंने चरखेका सन्देश सुनाया। अुन्होंने हमसे कहा कि सदियोंसे चरखा कंगालियतकी निशानी रहा है और अुन्होंने अुसे क्रांतिका वाहन बनाया। अिसलिअे अुन्होंने चरखेको अहिंसाका प्रतीक कहा। गांधीजीकी रायमें जब तक समाजमें केन्द्रवादी राजनीतिक तथा आर्थिक व्यवस्था समाप्त होकर विकेन्द्रित स्वावलम्बी समाज कायम नहीं होगा, तब तक समाजके शोषणका निराकरण नहीं हो सकता। अिसीलिअे गांधीजीने चरखा-संघको गरीबोंको राहत पहुंचानेकी बात छोड़कर स्वावलम्बी कार्यक्रमके जरिये ग्राम-स्वावलम्बनका संगठन कर देहाती आबादीकी शोषण-मुक्तिका मार्गदर्शन करनेको कहा।

चरखा-संघने वह प्रोग्राम अपने हाथमें लिया। अिसका मतलब यह नहीं है कि देशमें राहतके कामकी आवश्यकता नहीं है। वह तो हर देशमें और हर युगमें कुछ-न-कुछ हद तक रहेगी ही। और विशेष रूपसे आज भारतकी परिस्थितिमें अुसकी काफी आवश्यकता है। लेकिन राहतकी आवश्यकता चाहे जितनी हो, अुससे गरीबोंको राहत ही मिल सकती है, गरीबी दूर नहीं हो सकती। गरीबी तो विकेन्द्रित स्वावलम्बी समाजवादसे ही दूर हो सकती है।

अब प्रश्न यह है कि राहतका काम कौन करे? क्या चरखा-संघ अुसीको चलाता रहे और मूल क्रांतिके कामको छोड़ दे? अैसा करनेसे समस्याका समाधान नहीं होता। यह सही है कि जब तक देशमें विदेशी सरकार थी और राहत देनेवाला कोअी नहीं था, तब तक चरखा-संघ ही अुस कामको करता था। लेकिन विदेशी राजके हटने पर बेकारी और गरीबीको राहत पहुंचानेकी जिम्मेदारी सरकारकी हो गअी है। सरकार खादी और ग्रामोद्योग

www.vinoba.in

बोर्ड कायम करके अिस जिम्मेदारीको अमलमें लानेकी कोशिश भी कर रही है। अिसके अलावा, देशमें बहुतसे अैसे मित्र हैं, जो चरखेके क्रांतिकारी पहलूको नहीं समझते या नहीं मानते। लेकिन वे गरीबोंको राहत पहुंचानेके परोपकारी पहलूके कायल हैं। अैसे मित्र खादी-कार्यकर्ताओंमें भी हैं और खादी-अुत्पादन तथा बिक्रीका काम चलाते हैं। स्वभावतः चरखा-संघ और आज सर्व-सेवा-संघ गांधीजीके मूल अुद्देश्य यानी समाज-क्रांतिकी दिशामें चरखेका काम चलानेकी कोशिशमें लगे रहकर सरकार और दूसरे मित्र जो राहतका काम करते हैं, अुनको अपने अनुभवसे सहयोग देता है। यही कारण है कि आज सर्व-सेवा-संघ सिर्फ वस्त्र-स्वावलम्बनका ही काम नहीं चलाता, बल्कि अिस कोशिशमें लगा हुआ है कि यह काम भी गांवके स्वावलम्बी नेतृत्व तथा व्यवस्थासे चले और सर्व-सेवा-संघ सिर्फ मार्गदर्शन और शिक्षणका काम करे। अिसी कारणसे संघ देशकी जनताको कमसे कम अन्न-वस्त्रकी चीजोंके बारेमें केन्द्रित अुद्योगोंका बहिष्कार करनेको कहता है।

अिस तरह यह सोचना गलत है कि चरखा-संघ केवल संस्थागत लाभ-हानिकी दृष्टिसे ही कार्यक्रममें परिवर्तन करता रहा है।

४. राहतके कामकी भी आवश्यकता है, अिसलिअे सर्व-सेवा-संघ खादीकी अुत्पत्ति-बिक्रीको भी प्रोत्साहित करता है। अगर किसी भंडारमें रद्दी पूनी बिकती है, तो वह किसी संस्थाकी नीतिके कारण नहीं, बल्कि अमुक भंडारकी व्यवस्थाकी कमीके कारण है। जैसे-जैसे अिस आन्दोलनमें योग्य व्यक्ति शामिल होते रहेंगे, वैसे-वैसे अिन व्यवस्थाओंमें सुधार अवश्य होगा।

६. स्वावलम्बनका अेक अुसूल घर-घरमें बुननेका है। मुल्क देहाती होनेके कारण परिवारोंमें अिसके लिअे काफी समय भी है। अिसलिअे जैसे कि शहरके लोग समझते हैं, यह मुश्किल काम नहीं है। योग्य कार्यकर्ता और संगठन चाहिये। आज भी आसामके घर-घरमें बुनाअीका काम चलता है। आसामके परिवारोंमें जितने दूसरे काम हैं, अुतने ही काम और प्रांतोंमें भी हैं। फरक अितना ही है कि वहां अिसका रिवाज है और दूसरी जगह नहीं। रिवाज चल जाने पर सारी गृहस्थीका काम करते हुअे लोग घरका थान बुन सकते हैं, जैसे कि आसामी परिवार सारे काम करते हुअे अुसे कर लेते हैं।

अिसका मतलब यह नहीं है कि अगर अैसा नहीं हुआ तो स्वावलम्बनका काम पूरा नहीं हुआ। अगर घर-घर चरखा और गांव-गांव करघा हो जाय, तो स्वावलम्बी समाज बन सकता है। लेकिन जहां तक आसानीसे हो सकता है, वहां तक ग्रामोद्योगके बजाय गृह-अुद्योगकी स्थापनामें ही स्वावलम्बी समाज अधिक सहज तथा स्थायी हो सकेगा।

७. बम्बअी और दिल्लीके खादी-भंडारके बारेमें मित्रोंको समझना चाहिये कि राहतकी खादी कुछ भावनाशील श्रीमानोंकी कृपा पर ही चल सकती है। अैसे दयालु लोगोंका जिस समय जो केन्द्र होगा, अुसी स्थान पर केन्द्र-भंडार खुल सकता है। आज राहतवाली खादीको प्रोत्साहन देनेवाले लोगोंमें अधिकांश लोगोंकी दृष्टि, सरकारी केन्द्र होनेके कारण दिल्लीकी ओर हो गयी है। स्वराज्य-आन्दोलनके दिनोंमें बम्बअी अुसका मुख्य केन्द्र बना था। वस्तुतः अिस प्रकारका हेरफेर किसी आन्दोलनकी नीतिका मूल हिस्सा नहीं होता, बल्कि परिस्थितिके हेरफेरके कारण होता है।

दूसरी बात यह है कि आज राहतकी खादी शहराती श्रीमानोंकी मददकी अपेक्षा सरकारी मददका भरोसा अधिक करती है, अिसलिअे भी जो लोग राहतकी खादी चलानेकी बात सोचते हैं, अुन्हें केन्द्र-भंडारके लिअे दिल्ली ही अधिक अुपयोगी जंचती होगी।

दिल्लीमें जो भंडार खोला जा रहा है, वह चरखा-संघकी ओरसे नहीं बल्कि खादी और ग्रामोद्योग बोर्डकी योजनानुसार है।

८. खादीके कार्यकर्ता गांवमें जाना पसन्द नहीं करते हैं अैसा सोचना गलत है। वस्तुतः शहरोंमें जितनी खादी बिकती है, अुसकी अुत्पत्ति देहातोंमें ही होती है। अिसलिअे खादी-कार्यके अधिकांश कार्यकर्ता देहातोंमें ही रहते हैं। केवल वही लोग शहरमें रहते हैं, जो बिक्री-भंडारका काम करते हैं। सर्व-सेवा-संघका सदर दफ्तर भी देहातमें ही है। अिसलिअे संगठन और संयोजनके कार्यकर्ता भी देहातमें ही रहते हैं। दरअसल देहातमें रहे बिना खादीका काम हो ही नहीं सकता, क्योंकि शहरमें कदाचित् अेकाध व्यक्ति भले ही काते, अमूमन शहरोंमें चरखा नहीं चलता है।

९. बहुतसे मित्र यह आशा करते हैं कि कोअी अेकाध गांधी-ग्राम खड़ा किया जा सकता है। समाज-क्रांति कोअी जड़ निर्माणका काम नहीं है। वह विचार-क्रांतिके नतीजेसे होती है। विचार-क्रांति किसी घेरेकी मर्यादामें रखकर फैलायी नहीं जा सकती। गांधी-ग्रामका निर्माण तो गांधी-मानवके निर्माणके साथ-साथ ही संभव होगा। और जब होगा तो किसी अेक गांवमें वह दिखायी नहीं देगा, बल्कि सारे मानव-समाजमें चतुर्दिशामें अुसका दर्शन मिलेगा। देश और दुनिया भौतिकवादी तथा केन्द्रवादी रह जाय और अेक गांव विकेन्द्रित-स्वावलम्बी हो जाय अैसी कल्पना करना वैसा ही है, जैसी कि समुद्रके बीचके अेक घड़ा पानीमें से नमक निकालकर अुसे मीठा करनेकी कल्पना। जो मित्र गांधीवादकी प्रगति देखना चाहते हैं, अुन्हें गांधीजीके बताये मंत्रके अनुसार देशभरमें विचार-क्रांति फैलाना चाहिये और अुस विचार-क्रांतिके आधार पर गांव-गांवमें नवनिर्माणका काम चलाना चाहिये। अिसी कामके लिअे गांधीजीने जब अपनी समग्र ग्रामसेवाकी क्रांतिकारी योजना देशके सामने रखी थी, तो अुन्होंने सात लाख देहातोंके लिअे सात लाख नौजवानोंकी मांग अेक साथ की थी। क्योंकि वे जानते थे कि किसी अेकाध गांवमें कुछ सुधारके काम भले ही हों, लेकिन समाज-परिवर्तनकी क्रांति नहीं हो सकती।

वस्तुतः आज रचनात्मक कार्यक्रमको माननेवाले काफी लोग कार्यक्रमके मुद्दोंके ही बारेमें सोचते हैं, लेकिन अुसके भीतरके क्रांतिकारी संदेश पर विशेष विचार नहीं करते। यही कारण है कि हमें ग्रामोद्योगके संगठनकी चेष्टाके साथ-साथ केन्द्रित अुद्योगोंके बहिष्कारकी आवश्यकता नहीं दीखती; और यही कारण है कि हम स्वावलम्बनकी बात करते हैं। लेकिन अपनेको अुत्पादक श्रमिक बनानेकी ओर कदम बढ़ानेकी अनिवार्य आवश्यकता महसूस नहीं करते। अिसी विचार-परिपाटीका नतीजा है कि हम गांधीजीके बताये कार्यक्रमको अेक गांवमें पूर्ण रूपसे चलाकर अेक गांधीग्राम बनानेका स्वप्न देखते हैं।

पुराणोंमें लिखा है कि काशी, पृथ्वीके बाहर शिवजीके त्रिशूल पर स्थित है। अुसी तरह शायद हम भी सोचते हैं कि किसी गांवको पृथ्वीसे बाहर रखकर गांधीजीकी तकली पर प्रतिष्ठित करना संभव है। लेकिन अैसा नहीं हो सकता है।

मुझे आशा है कि गांधीजी और अुनके कार्यक्रम पर श्रद्धा रखनेवाले मित्र छोटे दायरेमें न सोचकर गांधीजी द्वारा प्रतिपादित महान और विस्तृत युग-क्रांतिकी बात व्यापक दायरेमें ही सोचेंगे। अैसा करनेसे जो छोटे-मोटे तात्कालिक अंधकार दिखायी देते हैं, अुनसे वे निराश नहीं होंगे; बल्कि हमेशा अपने सामने क्रांतिकी मूल ज्योतिको ध्रुव तारेके रूपमें रखकर आगे बढ़ते रहेंगे।

धीरेन्द्र मजूमदार

www.vinoba.in

## पशुओंकी चीर-फाड़ रोकी जाय

सम्पादक, हरिजन

मुझे ज्ञात हुआ है कि श्री रुक्मिणी देवी अरुण्डेल द्वारा पशुओंकी चीर-फाड़ (चिकित्सा-विज्ञानके नाम पर जीवित पशुओं पर होनेवाले तरह तरहके कष्टकर प्रयोग) रोकनेके लिअे पेश किया हुआ अेक विल अिस समय भारतीय संसद्के सम्मुख अुपस्थित है। कृपया अुस पर दो शब्द लिखनेकी अिजाजत देकर मुझे अनुगृहीत करेंगे।

जब कोअी देश पराधीनताकी लम्बी अवधिके बाद अपनी आजादी पुनः हासिल करता है, तब अुसमें अकसर बिना सोचे-समझे अपने विदेशी शासकोंके कुछ विचार और रूढ़ियां जारी रखनेकी प्रवृत्ति पायी जाती है। मुझे यह देखकर बहुत दुःख हुआ है कि भारतने पशुओं पर होनेवाली चीर-फाड़की घृणित प्रथाको जारी रखा है, सिर्फ अितना ही नहीं, पिछले कुछ वर्षोंमें अिस तरहके प्रयोगोंमें काफी वृद्धि हुअी है। ये प्रयोग बिलकुल व्यर्थ होते हुअे भी अिस अुम्मीदसे किये जाते हैं कि अुनसे मनुष्योंको होनेवाली बीमारियोंका — जिनमें से अधिकांश मनुष्यकी मूर्खताका ही अनिवार्य परिणाम होती हैं — अिलाज ढूंढ़नेमें मदद मिलेगी।

ब्रिटेनमें, जहां पशुओं पर होनेवाले अिन घृणित प्रयोगोंकी संख्या प्रतिवर्ष २० लाख है, यह प्रथा अितनी गहरी जम गअी है कि अुसे हटाना मुश्किल हो गया है। लेकिन भारतमें स्थिति अैसी कठिन नहीं है। और अगर मानव-सुलभ प्रेम और सहानुभूतिकी ताकतका तत्काल संघटन किया जाय और अुसे अुद्देश्यकी सिद्धिमें नियोजित किया जाय, तो पशुओंकी अिस चीर-फाड़को रोकना सम्भव है। स्वास्थ्यकी रक्षा और सुधारके लिअे, प्रयोगशालामें अिन पशुओंको कष्ट पहुंचानेके बनिस्बत कहीं ज्यादा अच्छे अुपाय मौजूद हैं। मैं बहुत आशा करता हूं कि श्रीमती अरुण्डेलकी कोशिश सफल होगी और भारत दुनियाके लिअे अेक अनुकूल अुदाहरण पेश करेगा।

१ नवम्बर, १९५३
४७, व्हाअिट हाल,
लन्दन, अेस० डब्ल्यू० १
अिंग्लैंड

**विल्फ्रिड टिलडेसले,**
मंत्री, ब्रिटिश यूनियन फॉर दि
अेबोलिशन ऑफ व्हिव्हीसेक्शन

[मैं श्री टिलडेसलेके अुपर्युक्त कथनका समर्थन करता हूं, खासकर हमारी 'बिना सोचे-समझे अपने विदेशी शासकोंके कुछ विचार और रूढ़ियां जारी रखनेकी प्रवृत्ति' के सम्बन्धमें अुन्होंने जो कुछ कहा है अुसका। हम अपने दुःखद अनुभवसे जानते हैं कि यह कथन हमारे शासनके दूसरे कअी विभागोंके लिअे भी सही है। अुदाहरणके लिअे, शासकोंके परिवर्तनका सरकारी नौकर-वर्गके अूपर कोअी खास प्रभाव नहीं हुआ है। वह अपने पुराने तौर-तरीकोंका अितना ज्यादा आदी है कि नये शासक अुससे अुन्हें छुड़ा नहीं पाये हैं। लाल फीतासे सम्बन्धित काम टालनेकी पुरानी प्रवृत्ति जारी है। शासन-कार्यकी प्रणाली और नियमोंमें नये विचारोंके प्रवेशका पुराणपंथी नौकरशाही सख्त विरोध करती है। हमारी अहिंसक क्रांति, जिसने हमें आजादी दिलायी, अभी अिस क्षेत्रमें प्रवेश नहीं कर सकी है। पशुओंकी चीर-फाड़ और अनिवार्य टीकाकी प्रथा तो कमसे कम बन्द होनी ही चाहिये। हम आशा करें कि हमारी स्वराज्य सरकार, जैसा कि पत्रलेखक चाहते हैं, अिस सम्बन्धमें दुनियाके लिअे अुदाहरण पेश करेगी।

९–११–'५३ — म० प्र०]
(अंग्रेजीसे)

## सत्याग्रह बनाम धमकी

['पीस मेकर' के ६ जूनके अंकमें अुसके किसी पाठकने अपने पत्रमें गांधीजीकी सत्याग्रहकी पद्धतिके विषयमें लिखते हुअे कहा था कि "वह अुस विनीत (ज्यादा विनीत नहीं) धमकीका ही अेक प्रकृष्ट रूप है जिसका प्रयोग बच्चे अपनी हठकी पूर्तिके लिअे अपने मां-बाप पर अकसर करते हैं।" ता० ३ अगस्त, '५३ के अंकमें अेक दूसरे पाठकने अपने पत्रमें अिस कथनका विरोध किया है। पत्र दिलचस्प है; अुसका आवश्यक हिस्सा नीचे दिया जा रहा है: — म० प्र०]

८–११–'५३

६ जूनके 'पीस मेकर' में व्यक्त किया गया यह मत सत्याग्रहके अिस बुनियादी सिद्धान्तकी अुपेक्षा करता है कि सत्याग्रही नये विचारोंके लिअे समाजकी स्वीकृति लोगोंको समझा-बुझाकर हासिल करता है। वह अपनी तपस्याके जरिये लोगोंका ध्यान खींचता है, अुन्हें विचारके लिअे प्रेरित करता है और अुनकी कर्तव्य-बुद्धिको जगाता है।

सत्याग्रहका मुख्य अुद्देश्य, जैसा कि गांधीजी और अुनके अनुयायियोंने सावधानीके साथ विस्तारपूर्वक बताया है, किसीको बाध्य करनेका नहीं, बल्कि अपनी तपस्याके द्वारा अुसे अुसकी भूलसे बचानेका है, और सत्याग्रह सफल तभी माना जा सकता है जब कि जिनके लिअे वह किया जा रहा हो अुनका हृदय-परिवर्तन हो। अिसलिअे सत्याग्रहमें और अुस हठी लड़केके अुदाहरणमें, जो अपने पिताको धमकी देता है, कोअी समानता नहीं है। लड़का भूख-हड़तालका आश्रय अपने स्वार्थकी सिद्धिके लिअे लेता है, पिता अुसकी मांगसे सचमुच सहमत होता है या नहीं, अिसकी अुसे कोअी परवाह नहीं है; — अुसकी भूख-हड़तालकी मूल प्रेरणा समाजका हित करनेवाली नहीं, द्रोह करनेवाली है।

यह कथन अिस बातकी भी अुपेक्षा करता है कि गांधीजीने अनेक बार अपना अनशन या अहिंसक प्रतिरोधके अुपायकी तरह अुठाया हुआ कोअी दूसरा कदम अिसलिअे वापिस ले लिया था कि अुनके कार्यके पीछे प्रतिपक्षीके सुधार और अुद्धारकी भावना है, अिस बातको लोग समझे नहीं और अिसलिअे अुसका सामाजिक अुद्देश्य निष्फल जानेकी संभावना थी। लोग अगर अिस बातको न समझें, तो वह लोगोंकी सहमतिकी अभिव्यक्तिके बजाय हिंसा और जबरदस्तीका रूप ग्रहण कर लेता है और असफल रहता है।

जैसा कि राशेल वेल्शने बताया है, धमकीमें हिंसा और जबरदस्तीकी भावना है, जबकि सत्याग्रहकी भावना सामाजिक हितकी, करुणा और प्रेमकी है — अुस प्रेमकी जो 'पराजय जानता नहीं और कितनी भी आपत्तियां आयें अडिग रहता है'। गांधीजीने प्रेमपूर्वक दुःख सहनेकी अिस शक्तिका प्रयोग लोगोंके सुधारके लिअे, अुन्हें शिक्षा देनेके लिअे किया। अिस अुपायके द्वारा वे लोगोंका ध्यान खींचते थे और अपनी यज्ञरूप तपस्याके द्वारा — अनशन जिसका अेक प्रकार था — लोगोंकी कर्तव्य-बुद्धि जगाते थे।

अीसा मसीहका प्राणत्याग अिस तपस्याका महत्तम प्रतीक है, अुसे कोअी जबरदस्ती या धमकीमें नहीं शुमार कर सकता। लेकिन अुसका अुद्देश्य भी बहुत कुछ वही था, यानी दूसरोंकी भूलके लिअे खुद प्रायश्चित्त करके मनुष्य-समाजकी धर्म-बुद्धिको जगाना।

गांधीजीके अनशनमें भी दूसरोंके लिअे खुद प्रायश्चित्त करनेकी वृत्तिका अंश था। यदि समाजके अुद्बोधनका अुनका तात्कालिक अुद्देश्य असफल हो जाता था, तो वे पापग्रस्त समाजकी गलतियोंके प्रायश्चित्तके रूपमें अिस अंतिम बलिदानके लिअे तैयार रहते थे। मनुष्य-समाजकी धर्म-बुद्धिको जगानेका यह अुनका अंतिम साधन था।

(अंग्रेजीसे)

**केरोलिन अेफ० यूरी**

www.vinoba.in

## सूतांजलि

सूतांजलि पर लिखते हुअे हर प्रान्तमें सूत्रकूट-पर्वत खड़ा करनेका विचार मैंने लोगोंके सामने पेश किया था। कार्यकर्ताओंको वह आकर्षक मालूम हुआ और कअी जगह हासिल हुअी गुंडियोंका अेक ढेर जमा करके अुसको सूत्रकूट-पर्वतके नामसे निर्दिष्ट किया गया और अुसके फोटो लोगोंने मेरे पास भेजे। पर्वत तो वे नहीं थे, टीले भी नहीं थे। थे छोटे-छोटे ढेर ही। फिर भी मुझे वह अच्छा लगा, क्योंकि लोक-मानसमें कल्पनाका आरोपण हो चुकनेका वह संकेत था।

गये साल कुल गुंडियां देशभरमें डेढ़ लाखके करीब हुअी थीं, जिनमें ४० हजार अकेले गुजरातकी थीं। गुजरातके अुत्साही जवानोंने अिस सालके लिअे संकल्प किया है — पचहत्तर हजार गुंडियां प्राप्त करनेका। जन-संख्याके हिसाबसे अेक प्रतिशत गुंडी मिले, अैसी अुसमें कल्पना है। थोड़े परिश्रमसे गुजरातमें अितना काम हो सकेगा, अिसमें कोअी शंका नहीं। गांधी-विचारका बीज अुस भूमिमें गहरा बोया गया है।

जिस तरह गुजरातवालोंने सोचा है, अुस तरह हर प्रांतमें सोचा जा सकता है। सिर्फ बात अितनी ही है कि अुसका अेक सुव्यवस्थित आयोजन करना पड़ेगा और गांव-गांवमें पहुंचना पड़ेगा। सर्वोदय-विचारके प्रचारके विषयमें जो शंकाशील वातावरण गांधीजीके चले जानेके बाद चंद साल था, वह अब नहीं है। भूदान-यज्ञका अितना प्रभाव जनता पर पड़ा है कि सर्वोदयको "अेक अुत्तम, लेकिन अव्यवहार्य" कार्यक्रम अब लोग नहीं समझते हैं, बल्कि अब वे समझने लगे हैं कि अिसीसे लोक-कल्याण होगा, और वह शक्य भी है। कार्यकर्ताओंको वातावरणके अिस परिवर्तनका लाभ अुठाना चाहिये।

सरकारी योजनामें भी खादीकी अनिवार्यताका कुछ भान होने लगा है। स्वयंपूर्ण ग्रामराज्यकी दृष्टिसे नहीं, तो बेकारी हटानेकी तात्कालिक गरजसे ही क्यों न हो, खादीका वजन बढ़ रहा है। आहिस्ता-आहिस्ता ध्यानमें आ रहा है कि खादी जैसे 'आजादीका लिबास' रही, वैसे राजनैतिक आजादी प्राप्त करनेके बाद वह 'साम्ययोगका संकेत-चिन्ह' बन सकती है। अर्थात् खादीके दो पंखोंमें से स्वराज्य-प्राप्तिके बाद अेक पंख कट गया अैसा जिन्हें महसूस होता था, वे समझ रहे हैं कि अुस कटे हुअे पंखकी जगह अेक नया पंख फूट निकला है। अिसका अर्थ यह होता है कि अब सूतांजलि न सिर्फ देहातोंसे, बल्कि दिल्लियोंसे भी हासिल हो सकेगी। अिसका भी लाभ कार्यकर्ताओंको अुठाना चाहिये।

सूतांजलिकी सारी शक्ति 'प्रति मनुष्य अेक गुंडी' अिस मंत्रमें है। अुससे गुंडी देनेवालोंका अेक वैचारिक परिवार बन जायेगा। सर्वोदय-समाजके रजिस्टरमें तो हजारोंके नाम होंगे, लेकिन सूतांजलि देनेवाले लाखों होंगे। बल्कि अुतनी पुरुषार्थ शक्ति हममें हो, तो करोड़ों भी हो सकते हैं। समर्पित गुंडीके साथ दाताका नाम और पूरा पता तो रहना ही चाहिये, लेकिन अुम्र भी दर्ज हो। छोटे-बड़े सब अिसमें दे सकते हैं। अिसलिअे अिसमें न सिर्फ वर्तमानका प्रतिबिंब अुठेगा, बल्कि भविष्यका भी सूचन मिलेगा।

अुस-अुस प्रांतमें प्राप्त गुंडियोंका विनियोग सर्व-सेवा-संघ साधारणतया अुस-अुस प्रांतमें ही करेगा। परिश्रमनिष्ठ संस्थायें खड़ी करनेमें गुंडियोंका सर्वोत्तम अुपयोग माना गया है। मेरा सुझाव है कि अगले सालके लिअे दस लाख गुंडियां अिष्टांक माना जाय। १२ फरवरी तक ये सारी गुंडियां समर्पित की जानी चाहिये। मुझे आशा है कि पक्षातीत सर्वोदय चाहनेवाले सब लोग अुत्साहसे अिस काममें योग देंगे।

सकरपुरा, (बिहार) **विनोबा**
३-११-'५३

## टिप्पणियां

### आजकी भारतीय फिल्में

संपादक, हरिजन

प्रिय महोदय,

कुछ समयसे देशकी जाग्रत जनतामें हमारी फिल्मोंके दिनों-दिन गिर रहे स्तरके बारेमें बड़ा शोरगुल सुनाअी पड़ता है। आजकी फिल्में केवल पैसा कमानेकी वृत्तिसे ही बनाअी जाती हैं। वे मानव मनमें रही काम-वृत्तिको अुत्तेजित करने पर तुली हुअी हैं। अैसा मालूम होता है कि हमारे अुत्पादक और निर्माता हॉलिवुडकी बुरीसे बुरी बातें अपनाकर अपनी फिल्मोंमें लोगोंके सामने पेश करना चाहते हैं। जब हम अपने बच्चोंको सिनेमाके तथाकथित नायक-नायिकाओंका अन्धानुकरण करते देखते हैं तो बड़ा दुःख होता है। मनमाने ढंगसे बनाअी हुअी अिन भद्दी फिल्मोंके कारण आन्तरराष्ट्रीय क्षेत्रोंमें हमारी भारतीय संस्कृति और सभ्यता बहुत बदनाम हुअी है। अिन्होंने हमारी नअी पीढ़ीके दिमागको दूषित कर दिया है और अुसके ध्यानको काम-विकार और भोग-विलासकी तरफ मोड़ दिया है। अिससे दुनियामें अेक सुदृढ़ राष्ट्र निर्माण करनेके हमारे दीर्घकालीन स्वप्नको बड़ा आघात पहुंचा है। अब वह समय आ गया है जब जनताको अैसी फिल्मोंके खिलाफ अपनी आवाज अुठानी चाहिये। क्या दिग्दर्शक और निर्माता सावधान बनकर स्वेच्छासे अपनी फिल्मोंका स्तर अूंचा अुठावेंगे? हमारे शासक जितनी जल्दी अिस क्षेत्रमें हस्तक्षेप करेंगे, अुतना ही हमारे स्वतंत्र भारतके होनहार बालकोंका कल्याण होगा।

(अंग्रेजीसे) **सुरेन्द्र परीख**

### सर्वोदय-समाज

दर्ज हुअे सेवकोंकी प्रांतवार सूची तैयार करने और आते सम्मेलन-सम्बन्धी अन्य कामकी भीड़के कारण, ३१ दिसम्बरके बादसे सम्मेलन तक सेवक दर्ज करनेका काम बन्द रहेगा। यह पहले भी (ह० सेवक, ६-६-'५३) हम जाहिर कर चुके हैं।

जिनको चांडिल सम्मेलनके बाद हमारे कार्यालयसे अभी तक कोअी सेवक नंबर नहीं मिला, वे सब समझें कि अुनका नाम अब सेवक-रजिस्टरमें नहीं है।

जो अपना नाम सेवकोंमें दर्ज करवाना चाहते हैं, वे हमें लिखकर अपने लिअे फार्म मंगवा लें और दिसम्बर पूरा होनेसे पहले हमें पहुंचा दें।

अेक ही व्यक्तिको बहुत ज्यादा फार्म भेजनेका रिवाज नहीं रखा है।

१२-११-'५३ **वल्लभस्वामी**
सर्वोदय-समाज, सेवाग्राम

विषय-सूची


| | | पृष्ठ |
|---|---|---|
| शराबबंदी और सरकार — २ | स्वामी आनन्द | ३०५ |
| सख्य-भक्तिका जमाना | विनोबा | ३०६ |
| अुद्योगोंके लिअे भूदान-पद्धति | मगनभाअी देसाअी | ३०८ |
| कुछ शंकायें | धीरेन्द्र मजूमदार | ३०९ |
| पशुओंकी चीर-फाड़ रोकी जाय | विल्फिड टिलडेसले | ३११ |
| सत्याग्रह बनाम धमकी | कैरोलिन अेफ० यूरी | ३११ |
| सूतांजलि | विनोबा | ३१२ |
| टिप्पणियां : | | |
| आजकी भारतीय फिल्में | सुरेन्द्र परीख | ३१२ |
| सर्वोदय-समाज | वल्लभस्वामी | ३१२ |


www.vinoba.in